07 / 03 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संकल्पों की गति धैर्यवत कर सदा

बेगमपुर का बादशाह बनने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा स्मृति स्वरूप हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा एकनामी हूँ...

→ इसी एकरस स्थिति में स्थित हूँ...

→ स्मृति केवल...

- स्व स्वरूप की...
- एक बाप की...
- स्व कर्तव्य की...

➳ _ ➳ और मुझ आत्मा का कर्तव्य है...

→ व्यर्थ को समाप्त कर समर्थ का सृजन करना...

→ संकल्पों के बीज को सफलता के फल से संपन्न करना...

→ समर्थ संकल्पों के खजाने का सदुपयोग करना...

- क्योंकि, ये संकल्प ही... मुझ आत्मा के,
- मरजीवा जन्म का आधार हैं...
- विशेष एनर्जी हैं...
- खजाना हैं...
- भाग्य की लकीर है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा बापदादा के सम्मुख बैठी...

→ बाप दादा की आँखों में देख रही हूँ...

→ अपने श्रेष्ठ भाग्य की लकीर को..

→ वाह ! मेरे इस मरजीवा जन्म का भाग्य...

→ जब, मेरे ही संकल्पों से...

- सृष्टि बदल रही हैं...
- आत्माएं सतोप्रधान हो रही हैं...
- व्यर्थ का कीचडा भस्म हो रहा हैं...
- और मुझमे समाता जा रहा हैं...
- मेरा सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्वरूप...

➳ _ ➳ मैं आत्मा महसूस कर रही हूँ अपने सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्वरूप को...

→ सामने हैं सम्पूर्ण फ़रिश्ता बाप दादा...

→ अपने वरदानी हाथ फैलाएं हुए...

→ आँखों से बरसती स्नेह की चांदनी...

→ मेरे सम्पूर्ण वजूद से लिपट गयी हैं...

→ चांदनी के घेरे के बीच मैं आत्मा...

→ बाप दादा के हाथों की नरमी..

→ अपने सिर पर महसूस कर रही हूँ...

- मैं सर्व शक्ति संपन्न हो रही हूँ...
- सारी ही शक्तियाँ मेरी सेविका हैं...
- मेरे संकल्प सिद्ध हो रहे हैं...
- सफलता के फल से संपन्न हो रहें हैं...

➳ _ ➳ मैं विदेही, चल पड़ी हूँ अब, परमधाम की ओर...

→ देख रही हूँ परमधाम में...

→ दूर दूर तक फैला..

→ लाल सुनहरे प्रकाश का दरिया...

- इस दरिया को गहराइयों में समाती हुई मैं आत्मा...
- यहाँ की सम्पूर्ण शांति को...
- स्वयं में समाँ रही हूँ...
- अशांति के तमाम अवशेष...
- व्यर्थ संकल्प....
- अब पूरी तरह समाप्त हो गये हैं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा अब वापस अपनी देह में...

→ सेकंड मे अशरीरी..

→ और सेकंड में साकारी की अनुभवी हूँ ..

→ मेरे संकल्पों की गति धैर्य वत हैं...

→ मैं बेगमपुर की बादशाह...

→ मैं महावीर आत्मा...

→ मैं वरदानी, महादानी आत्मा...

- मेरे बोल अमृत वाणी है...
- मेरी दृष्टि वरदानी हैं...
- मेरे समर्थ संकल्पों से ही...
- सतयुग का सृजन...
- अब तीव्र गति से हो रहा हैं...